Subject - Philosophy
Class - B.A, Part-III (Hons)
Paper - V

धार्मिक चेतना (अन्तिम भाग)

Religious Consciousness (Final Part)

कुछ विद्वानों ने धर्म का आधार मात्र इच्छा को कहा है। मानव अपनी भावनाओं का प्रकाशन व्यवहारों में करता है। विश्व के अनेक धर्मों का आधार कर्म रहा है। मानव में आत्मरक्षा की भावना रहती है जिससे वह होना कुछ चाहता है, पर परिस्थिति वश वह कुछ और करता है। इस प्रकार आदर्श और मानव के बीच एक खाई हो जाती है। इस खाई की पूर्ति न भावना कर सकती है, न विवेक। इस खाई की पूर्ति केवल क्रिया से संभव है।

कान्ट, फिक्टे, आरनोल्ड टाइटहेड इत्यादि दार्शनिकों ने संकल्प को धर्म का सर्वस्व कहा है। जिन लोगों

ने धार्मिक कर्म को प्रधानता दी है, उनके तर्क निम्नलिखित है। इन तर्कों को क्रियात्मक पहलू के पक्ष में युक्तियाँ (Arguments in favour of conative element) कहा जाता है।

(1) धार्मिक हम उसे कहते है, जो धार्मिक क्रियाओं को सम्पादित करता है। धर्म का प्रधान पहलू क्रिया प्रतीत होता है।

(2) धर्म के विकास का जब हम अध्ययन करते है, तो पाते है कि धर्म, मानव का ईश्वर के प्रति व्यवहार है। मानव अपनी सीमा के विरुद्ध संघर्ष करने से धार्मिक हो जाता है। संघर्ष एक क्रिया है। अतः धर्म का आधार क्रिया को ही कहा जाता है।

(3) धर्म में विकास या प्रगति तभी आ सकती है, जब धर्म क्रियाशील हो। संकल्प द्वारा विकास को अपनाया जाता है। इससे सिद्ध होता है कि धर्म का आधार संकल्प ~~है~~ है।

कुछ विद्वानों ने इस मत के विरुद्ध कुछ युक्तियां रखी हैं, जिन्हें क्रियात्मक पहलू के विरुद्ध तर्क (Arguments against conative element) कहा जाता है।

(1) कर्म को धर्म का एकमात्र आधार मानना गलत है। कर्म ज्ञान के अभाव में यंत्रवत् है। धर्म को धर्म कहना धर्म का उपहास करना है।

(2) यदि धर्म में क्रियात्मक पहलू को ही मात्र प्रधानता दी जाए तो धर्म में संकीर्णता का समावेश हो जाता है। अत: धर्म का आधार मात्र कर्म नहीं है।

(3) मानव एक विवेकशील प्राणी है। मानव के पास मस्तिष्क तथा हृदय है। मानव की तुलना मशीन से नहीं की जा सकती है। यदि धर्म का आधार सिर्फ व्यवहार को बनाया जाए तो उससे धर्म मानव के संपूर्ण व्यक्तित्व की सार्थकता प्रमाणित करने में असफल होगा। अत:

हमें मानना ही होगा कि धर्म का आधार संकल्प को नहीं कहा जा सकता है।

अंत में निष्कर्ष के रूप कहा जा सकता है कि धर्म का आधार न सिर्फ ज्ञान है, न सिर्फ भावना और न सिर्फ व्यवहार है। सच पूछा जाए तो धर्म ज्ञान, भावना और कर्म तीनों का समन्वय है। जिस प्रकार विचार, भाव और संकल्प मन के तीन अंग है, ठीक उसी प्रकार धार्मिक चेतना के तीन अंग है। किसी एक अंग को ग्रहण करना तथा अन्य अंगों की उपेक्षा करना गलत है। धर्म संपूर्ण मानव-मन की प्रतिक्रिया है। अतः धार्मिक चेतना में धर्म के तीनों पहलुओं का ध्यान रहना स्वाभाविक है।

धर्म की वही परिभाषा सफल मानी जाती है, जिसमें धर्म के तीनों पहलुओं का विवेचना होती है। धर्म के लिए तीनों पहलुओं का

रहना नितांत आवश्यक है। यह ठीक है कि विशेष काल या परिस्थिति में कोई पहलू गौण रहता है, और कोई प्रधान।

आधुनिक वैज्ञानिक काल में धर्म का ज्ञानात्मक पहलू प्रधान है क्योंकि यह तर्क तथा बुद्धि-प्रधान काल है। आदि-कालीन धर्म तथा प्राकृतिक धर्म में क्रियात्मक पहलू की प्रधानता दी गई है। धर्म संवेगात्मक, ज्ञानात्मक तथा व्यावहारिक तीनों है। अतः धार्मिक चेतना में ज्ञानात्मक, भावनात्मक तथा क्रियात्मक तीनों पहलूओं का पारस्परिक महत्व स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है।

Dr. Md Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College,
V.K.S.U, Ara.